© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

महाकवि कालिदास का सौन्दर्य विषयक चिन्तन

डॉ बीनू सिंह

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

संस्कृत–साहित्य के महनीय कवि कालिदास की कविता देववाणी का शृंगार है। कालिदास के काव्य को माधुर्य का सन्निवेश, प्रसाद की स्निग्धता तथा पदों की सरस शैय्या कमनीय बनाते है। कालिदास अपने काव्य में इस जगत् को सुन्दर रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी दृष्टि में इस संसार के प्रत्येक कण–कण से सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है। कालिदास ने जिस सौन्दर्य की अनुभूत की उसमें प्रेरणा, जागृति आदि तत्त्व सन्निविष्ट हैं। सत्यम् शिवं सुन्दरम् की मान्यता के आधार पर समस्त सृष्टि सुन्दरता को प्राप्त है। वैदिक ऋषियों ने उषा को सुन्दरी युवती बताकर उषा को जीवन–सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति बताया जिसके स्पर्शमात्र से ही सोया हुआ व्यक्ति भी जाग जाता है। उपनिषदों में भी सुन्दर हैमवती रमणी को प्रेरणा के स्तोत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है **– तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहु शोभमानामु मां हैमवती .....** (केनोपनिषद 3/12 इशादि नौउपनिषद् गीता प्रेस गोरखपुर) अमरकोष में मनोरम शब्द के अर्थ में सुन्दर आदि 12 शब्दों का प्रयोग किया गया है–

द्वादश मनोरमस्य – **सुन्दरं रूचिरं चारू सुषमं साधु शोभनम्।**

कान्तं मनोरमं रूचयं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम्।।

(अमरकोष 3/1/52 मन्नालाल अभिमन्यु चौखम्बा विद्याभवन।)

सुन्दर शब्द की व्युत्पत्तिमूलक अर्थ – (1) सुद्रियते इति सुन्दरम् (2) सु उनत्ति चित्तं द्रवीकरोति। (अमरकोष 3/1/52 की व्यख्या मन्नालाल अभिमन्यु चौखम्बा विद्याभवन।) प्रथम व्युत्पत्ति में सुन्दर शब्द का अर्थ होगा – जिसके प्रति मन में अच्छी प्रकार आदर समर्पित हो जाने का भाव हो वह सुन्दर है। दूसरी व्युत्पत्ति का अर्थ है जो सुष्ठु रूप से चित्त को द्रवित कर दे। अर्थात् सौन्दर्य वह तत्त्व है जो चित्त के तमस् एवं रजस् भाव को अभिभूत करके सत्त्व का उद्रेक हुए चित्त में समाहित हो जाता है। सौन्दर्य वस्तु में रहने वाला वह धर्म है जो वस्तुगत होकर भी सहृदय के मन को द्रवीभूत करके उसे अपने रंग में रंग देता है।

पाश्चात्य विचारकों की सौन्दर्य विषयक अवधारणा वाह्म परिस्थितियों पर आधारित है। रिचर्ड प्राइस ने "**सुडौलता**" वैचिन्य सुश्रृंखला और सममातृत्व को सौन्दर्य का कारण माना है। (रिचर्ड प्राइस पृ.26 सौन्दर्य विज्ञान हरिवंश सिंह शास्त्री) डेविड ह्यूम ने कहा है – सौन्दर्य वस्तुओं का कोई स्वगत गुण नहीं होता वह तो केवल उस मन में रहने वाला एक धर्म है महाकवि कालिदास का सौन्दर्य विषयक चिन्तन अद्वितीय है। कालिदास का सौन्दर्य विषयक चिन्तन कल्पना शक्ति से चमत्कृत हुआ है। कालिदास की सृष्टि में शिव की अष्टमूर्तियों समाहित है तो यह जगत् क्यों नहीं सुन्दर प्रतीत होगा। अभिज्ञान शाकुन्तलम् के नान्दी–पाठ में

लिखते हैं– **या सृष्टिः स्रष्टुराद्या .....वस्ताभिरष्टाभिरीशः।** (अभिज्ञानशाकुन्तलम् नान्दीपाठ डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, राम नारायण लाल प्रकाशक इलाहाबाद)

जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है (अर्थात् जलरूप मूर्ति) जो विधिपूर्वक हवन की गयी हवि को ले जाती है (अर्थात् अग्निरूप मूर्ति), जो होता है (अर्थात् यजमान रूप मूर्ति), जो दो समय का निर्धारण करती है (अर्थात् सूर्य और चन्द्ररूपी मूर्तियाँ, जो दिन और रात्रि को बनाती है), शब्द जिसका गुण है और विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है (अर्थात् पृथ्वी रूप मूर्ति) और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं (अर्थात् वायुरूपी मूर्ति) उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त ईश्वर आप लोगों की रक्षा करें। इन अष्ट मूर्तियों को स्पष्ट करते हुए कालिदास ने कुमार सम्भवम् में शिव के विषय में कहा है –

द्रवः संघातकठिनः स्थूलः सूक्ष्मो लघुर्गुरूः।
व्यक्ताव्यक्तेरश्वसि प्राकाम्यं विभूतिषु।।

(कुमारसम्भव 7/64 महेन्द्र प्रतापशास्त्री रामनारायण लाल प्रकाशक इलाहाबाद)

अर्थात् शिव तरल भी है एवं कठोर भी। स्थूल भी है और सूक्ष्म भी है, लघु एवं गुरू भी है, व्यक्त एवं अव्यक्त दोनों है। इससे यह सिद्ध होता है कि सम्पूर्ण संसार शिवरूप में अवस्थित है। शिव का सौन्दर्य कुमारसम्भवम् के सातवें सर्ग में उस समय व्यक्त होता है जब वह वर के रूप में हिमालय के नगर में प्रवेश करते हैं। नगर की स्त्रियाँ सब सुध खोकर इस प्रकार एक टक देख रही थी मानो उन्हें अपने नेत्रों से पी रही थी –

तवोकदृश्यं नयनैः पिबन्त्योः नार्यो न जग्मुर्विषयान्तराणि।
तथाहि शेषेन्द्रियवृत्तिरासां सर्वात्मिना चक्षुरिव प्रविष्टा।।

(कुमारसम्भव 7/65 महेन्द्र प्रतापशास्त्री रामनारायण लाल प्रकाशक इलाहाबाद)

कालिदास की दृष्टि में नारी ब्रह्म की अनुपम सृष्टि है। शकुन्तला के सौन्दर्य के विषय में कालिदास लिखते है – विधाता की सर्वशक्तिमत्ता और उसके शरीर पर विचार करके मुझे वह विधाता के द्वारा चित्र बनाकर, उसमें जीव संचार करके, मन से ही मानों सौन्दर्य समूह से बनाई गई विलक्षण स्त्री रत्न प्रतीत होती है। शकुन्तला का सौन्दर्य इतना अनुपम है जो बह्मा के सौन्दर्य रचना के कौशल को व्यक्त करता है। शकुन्तला के अद्वितीय सौन्दर्य को कालिदास दुष्यन्त की आत्मा में प्रविष्ट होकर कहते हैं –

अनाघ्रातं पुष्पं किसलमलूनं कररूहैः अनाविद्धं,
रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तार कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 2/10 डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल प्रकाशक इलाहाबाद)

उसका निष्कलंक सौन्दर्य न सूँघा गया फूल है, नाखूनों से न कटा हुआ कोमल पत्ता, न बिंधा हुआ रत्न है, जिसके रस का आस्वाद नहीं किया गया ऐसा नया मधु है और पुण्यों का अखण्डित फल सा है। पता नहीं, परमात्मा किसको उसका उपभोक्ता बनाएगा। कालिदास की दृष्टि में नारी का सौन्दर्य पूर्व जन्म में किए गए पुण्यों का अखण्ड फल है कालिदास के इस सौन्दर्य निरूपण में मर्यादा का फल है। वे एक मर्यादित एवं शीलवती भारतीय कन्या का चित्रण कर रहे हैं।

कालिदास की शकुन्तला ही नहीं वरन् उर्वशी भी सृष्टा की अनुपम सृष्टि है। उर्वशी के सौन्दर्य के विषय में कालिदास कहते हैं कि उर्वशी के सुन्दर रूप को कोई तपस्वी उत्पन्न नहीं कर सकता वरन् इसकी रचना के लिए कान्ति प्रदान करने वाला चन्द्रमा ही स्वयं ब्रह्म बना होगा अथवा श्रृंगाररस के देवता कामदेव ने उर्वशी के सौन्दर्य की सर्जना की होगी अथवा वसन्त ने उसे मनोयोग से बनाया होगा। भला वेद पढ़कर पत्थर बने हुए भोग–विलास से विरत रहने वाले बूढ़े ब्रह्मा कैसे इतने सुन्दर रूप की रचना कर सकते हैं – **अस्याः सर्गविधौ . ..... पुराणो मुनिः।** (विक्रमोर्वशीयम् 1/10 चौखम्बा साहित्य सीरीज, वाराणसी)

कालिदास ने नायिकाओं के प्राकृतिक सौन्दर्य का अत्यन्त मनोरम चित्रण किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में शकुन्तला नीचे से ऊपर तक प्रकृति की सच्ची कन्या थी। शकुन्तला का प्राकृतिक सौन्दर्य दुष्यन्त को प्रेमासक्त कर देता है। शकुन्तला व उसकी सखियों को देखकर दुष्यन्त कहता है – तपोवन में रहने वाली ये या तपस्वी कन्याएँ वनलता है और अन्तःपुर में रहने वाली स्त्रियाँ उद्यानलता। ये वनलताएँ स्वयं बिना किसी देखभाल के बढ़ने वाली होती है परन्तु उद्यान की लताओं की सौन्दर्य वृद्धि के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध होते हैं, अतः वे प्रयत्नवर्धित होती हैं –

शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।
दूरीकृताः खलु गुणैरूद्यालता वन लताभिः।।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/17 डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल प्रकाशक इलाहाबाद)

शकुन्तला के इसी प्राकृतिक सौन्दर्य से आकर्षित होकर दुष्यन्त कहता है –

अधरः किसलय रागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयम् यौवनमंगेषु संतद्धम्।।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/21 डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल प्रकाशक इलाहाबाद)

कालिदास के सौन्दर्य–निरूपण में केवल वाह्म सौन्दर्य की विद्युल्लेखा ही दीप्ति नहीं होती वरन् आन्तरिक सौन्दर्य की निधियाँ भी उनके हृदय में अन्तर्निहित होती है। इसीकारण से उनका वाह्म सौन्दर्य भी जनमानस को अपने में समाहित कर लेता है। वस्तुतः सौन्दर्य अनुपम तभी हो सकता है जब अन्तस्तल में सत् का प्रकाश हो। इसी स्वयं प्रकाश के निरन्तर प्रदीप्त रहने के कारण वाह्म सौन्दर्य की अनुपम अभिव्यक्ति होती रहती है। इसलिए कालिदास ने नारी को सृष्टि का आद्या रूप प्रदान किया है।